इन्दिरा गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

मानविकी विद्यापीठ (एसओएच)

(SOH)

एम.ए. हिन्दू अध्ययन

(MAHN)

कार्यक्रम -दर्शिका

Programme Guide

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110068

1. प्रस्तावना

यह भारतीय ज्ञानराशि के सांगोपांग अध्ययन हेतु समाज के सभी वर्गों के लिए ज्ञानप्रद और लाभप्रद कार्यक्रम है। हिन्दू शब्द से अभिव्यक्त किये जाने वाले भौगोलिक सम्प्रत्यय को मूलरूप से सनातन संस्कृति कहा जाता है। भौगोलिक परिचय के रूप में सिन्धु नदी से समुद्र पर्यन्त जो भूभाग है, उस भूभाग के निवासी और उनकी वंशावली को हिन्दू कहा जाता है। इस संस्कृति ने अध्यात्म, धर्म , विज्ञान, गणित, कला-कौशल, प्रशासन, राजव्यवस्था , अर्थनीति, कृषि आदि के क्षेत्रों में विश्व को बहुत कुछ दिया है। वर्तमान में भारत की विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्रणाली में हिन्दू संस्कृति की ज्ञान-परम्परा का अध्ययन पाठ्यक्रमों के रूप में प्रारम्भ हो चुका है। विदेश के विश्वविद्यालय जैसे-ऑक्सफोर्ड, केम्ब्रिज हिन्दू यूनिवर्सिटी आफ अमेरिका आदि भी हिन्दू अध्ययन सम्बन्धी पाठ्यक्रम को लोकप्रियता के साथ सन्चालित कर रहे हैं। बौद्ध अध्ययन , इस्लामिक अध्ययन जैसे पाठ्यक्रम भी पढाये जाते हैं जिनमें इस्लामिक और बौद्ध अध्ययन के तात्पर्य केवल कुरान तथा धम्मपद नहीं है। ठीक इसी प्रकार हिन्दू अध्ययन से तात्पर्य केवल वेद पुराण आदि नहीं है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता की समग्र निर्मिति में, जिसमें अमूर्त ज्ञानात्मक तत्वों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, उनका अध्ययन ही हिन्दू अध्ययन है। इस कार्यक्रम की अध्ययन सामग्री के द्वारा उक्त ज्ञानराशि की समग्र जानकारी प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है । इस प्रकार के अध्ययन से विद्यार्थी समाज के सरोकार में रहकर अपनी विद्या से स्वयं लाभान्वित रहते हुए, सभी के हित चिन्तन में भी संलग्न रहेंगे। राष्ट्रीयता की भावना भी सुदृढ होगी। देश की परम्परा का ज्ञान होगा। विषय ज्ञान के साथ-साथ रोजगार के प्रति प्रेरित करना और उसके लिए योग्य होने की क्षमता विकसित करना भी इस कार्यक्रम में सन्निहित है।

2. प्रवेश के लिए योग्यता : मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक अथवा उच्चतर उपाधि।

3. शिक्षा का माध्यम : हिन्दी

4. अवधि : न्यूनतम 2 वर्ष एवं अधिकतम 4 वर्ष, जुलाई तथा जनवरी दोनों प्रवेश सत्रों में उपलब्ध है।

5. शुल्क विवरण : 14000/ रू सम्पूर्ण कार्यक्रम। नियमानुसार प्रतिवर्ष प्रवेश एवं परीक्षा शुल्क

6. विशेष : 40 क्रेडिट का अध्ययन पूर्ण कर लेने वाले विद्यार्थी को द्वितीय वर्ष में अध्ययन छोड़ देने पर प्रवेश एवं निकास की विधि से पी.जी डिप्लोमा प्रदान किए जाने का प्रावधान है।

7. प्रवेश हेतु अधोलिखित लिंक का प्रयोग करें–

Link for ODL mode Programmes Admission Portals https://ignouadmission.samarth.edu.in/

8. क्रेडिट पद्धति : एम.ए. हिन्दू अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत क्रेडिट प्रणाली में कुल 80 क्रेडिट का निर्धारण किया गया है। यह कार्यक्रम वार्षिक प्रणाली की विधि से संचालित है। प्रथम वर्ष के पॉच पाठ्यक्रमों की कुल 40 क्रेडिट है। इसी प्रकार 40 क्रेडिट द्वितीय वर्ष का भी निर्धारण किया गया है।

9. शिक्षण प्रविधि : यह कार्यक्रम छात्रोन्मुखी ओडीएल शिक्षा पद्धति पर आधारित है। 8 क्रेडिट के प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए विषय विशेषज्ञों द्वारा लिखित पाठ्यसामग्री के साथ- साथ विषय के विद्वानों द्वारा निर्धारित पाठ्यसामग्री पर वीडियो लेक्चर आदि उपलब्ध कराये जाने की भी व्यवस्था है।

10. ई- पाठ्य सामग्री: विद्यार्थियों की सुविधा के लिए अध्ययन सामग्री की पीडीएफ फाइल विश्वविद्यालय की वेबसाइट ignou.ac.in के ई- ज्ञान कोश http://egyankosh.ac.in / पटल पर उपलब्ध होगी।

11. सत्रीय कार्य (Assignment) सभी विद्यार्थियों को असाइनमेंट भी बनाना होगा जिसका प्रश्न वेबसाइट के पटल पर अपलोड रहता है। उसकी प्रिंट निकाल कर एक- एक पेपर का उत्तर अलग-अलग लिखकर अपने स्टडी सेंटर में विद्यार्थियों द्वारा जमा किया जाएगा। यह कार्य सभी के लिए अनिवार्य है।

12. कार्यक्रम का विवरण - कुल 80 क्रेडिट

Course Codes	Title of the Course	Type of Course	Course Credits
	प्रथम वर्ष		
MHN-001	**हिन्दू अध्ययन की अवधारणा एवं स्वरूप**	Theory	08
MHN-002	**अध्ययन के मूल स्रोत**	Theory	08
MHN-003	**ज्ञान-मीमांसा**	Theory	08
MHN-004	**तत्व-मीमांसा**	Theory	08
MHN-005	**धर्म एवं कर्म -विमर्श**	Theory	08
	द्वितीय वर्ष		
MHN-006	**संस्कृत भाषा एवं साहित्य का परिचय**	Theory	08
MHN-007	**समाज एवं संस्कृति**	Theory	08
MHN-008	**कला-कौशल एवम् अर्थनीति**	Theory	08
MHN-009	**राज-व्यवस्था एवं प्रशासन**	Theory	08
MHN-010	**विविध विद्या-परम्परा**	Theory	08

कार्यक्रम समन्वयक - डॉ देवेश कुमार मिश्र, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली Email dkmisr@ignou.ac.in 01129572788

पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष

प्रथम पाठ्यक्रम

हिन्दू अध्ययन की अवधारणा एवं स्वरूप

प्रथम खण्ड : हिन्दू की संकल्पना

हिन्दू : संकल्पना के प्राचीन सन्दर्भ, प्राकृत, पालि वांगमय में हिन्दू संकल्पना के परिप्रेक्ष्य, लोक साहित्य में हिन्दू संकल्पना के परिप्रेक्ष्य, हिन्दू संकल्पना के अभिनव दृष्टिकोण

द्वितीय खण्ड: हिन्दू अध्ययन के तात्विक पक्ष

हिन्दू मन एवं हिन्दू जीवन - विश्वदृष्टि ,स्वबोध , स्वधर्म, सर्वमंगल की भावना, चिति एवं राष्ट्र की संकल्पना।

तृतीय खण्ड: प्रमुख भारत-विद् और उनके अवदान

तिलक, गांधी, मदनमोहन मालवीय, डॉ.हेडगेवार, क्षेत्रेश चन्द्र चट्टोपाध्याय, बंकिम चन्द, टैगोर श्री अरविन्दवासुदेव शरण अग्रवाल, श्री राजगोपालाचारी, विशुद्धानन्द पाठक, गोविन्द चन्द्र पाण्डेय ए.के. शरण, धर्मपाल, विद्यानिवास मिश्र आदि।

चतुर्थ खण्ड : हिन्दू सम्बन्धी भारतेतर विमर्श

ग्रीक,रोमन विमर्श में हिन्दू (इण्डिया),चीनी साहित्य के वृत्तान्त ,अरबी फारसी साहित्य में हिन्दू, यूरोपीय यात्री एवं व्यवसायियों के वृत्तान्तों में हिन्दू

पंचम खण्ड: हिन्दू अध्ययन की पश्चिमी दृष्टि

मिशनरी साहित्य तथा साम्राज्यवादी विमर्श ,जर्मन इन्डॉलाजी,ज्ञानमीमांसीय आक्रमण एवं प्रतिरोध, साम्राज्यवादी चेतना का भारत पर प्रतिकूल प्रभाव ,भारतीय ग्रन्थों के प्रति पाश्चात्य दृष्टि ,स्वतन्त्र शोध पर पाश्चात्य प्रतिबन्धक तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

षष्ठ खण्ड: विमर्श की पश्चिमी विधि

मार्क्सवादी दृष्टिकोण एवं समालोचना सिद्धान्त,भारत के चित्रण में संरचनावादी दृष्टिकोण,प्राच्यवाद का स्वरूप,तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययनों का स्वरूप ,मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पद्धति का प्रभाव, उत्तर-आधुनिकतावाद एवं विखण्डनवाद

सप्तम खण्ड: प्रवासी-हिन्दू भारतीयता

भारतीय प्रवासी: धर्म और जातीय तादात्म्य,वैश्विक हिन्दू प्रवासी: खाद्य ,संस्कृति एवं प्रवासी पहचान

द्वितीय पाठ्यक्रम

अध्ययन के मूल स्रोत

प्रथम खण्ड : वैदिक -स्रोत

वेद परिचय ,वेद शब्द के विभिन्न अर्थ एवं तात्पर्य ,ऋषितत्व एवं वैदिक शाखाएं, संहितापरिचय: ऋग्वेद, यजुर्वेद , सामवेद ,सामगान प्रविधि एवं अथर्ववेद संहिता, ब्राह्मण ग्रन्थों का स्वरूप एवं प्रतिपाद्य,आरण्यक साहित्य, आरण्यकों का स्वरूप एवं प्रतिपाद्य, उपनिषद साहित्य का परिचय

द्वितीय खण्ड : पौराणिक स्रोत

पुराण: अर्थ, लक्षण एवं प्रकार, पुराणों की विषयवस्तु एवं ऐतिहासिक संकल्पना, भागवत पुराण का सामान्य परिचय एवं वैशिष्टय, अग्निपुराण का सामान्य परिचय एवं वैशिष्टय

तृतीय खण्ड : वेदांग

शिक्षा तथा व्याकरण: स्वरूप प्रयोजन एवं प्रतिपाद्य,निरुक्त का प्रयोजन एवं उसका प्रतिपाद्य, छन्दस् एवं कल्प का प्रयोजन तथा प्रतिपाद्य,ज्योतिष का प्रयोजन, प्रतिपाद्य तथा सम्बद्ध ग्रन्थ

चतुर्थ खण्ड : सूत्र साहित्य

श्रौत सूत्र एवं गृह्यसूत्रों का परिचय, धर्मसूत्र एवं शुल्ब सूत्र की विषयवस्तु, षड्दर्शन एवं अन्य सूत्र ग्रन्थों का प्रतिपाद्य

पंचम खण्ड : आगम एवं संगम साहित्य

आगम: अर्थ, प्रकार प्रतिपाद्य, आगमों का वैशिष्ट्य, संगम साहित्य की विषयवस्तु एवं महत्व

षष्ठ खण्ड : प्रमुख कवि

भास एवं कालिदास के नाटकों का विशेष अध्ययन, कालिदास के काव्यों का विशिष्ट अध्ययन, कल्हण की राजतरंगिणी का प्रतिपाद्य एवं वैशिष्टय, गाथा-साहित्य: चन्द्रवरदाई का अध्ययन

सप्तम खण्ड : जैन ,बौद्ध एवं क्षेत्रीय भाषा साहित्य

जैन साहित्य की ज्ञानसम्पदा, बौद्ध साहित्य की ज्ञानसम्पदा, प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं में निहित ज्ञान-परम्परा

अष्टम खण्ड: पुरातात्विक साक्ष्य एवं अभिलेख

नवीन पुरातात्विक उत्खननों के परिप्रेक्ष्य, मृदभाण्डों पर अंकित प्रतीक, अभिलेखीय स्रोतों का परिचय, मौद्रिक साक्ष्य: मुद्रा एवं मुहर

तृतीय पाठ्यक्रम

ज्ञान-मीमांसा

प्रथम खण्ड : प्रमाण सिद्धान्त का परिचय

प्रमाण सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास, आदर्श ज्ञान के तत्व: प्रमाता, प्रमेय, प्रमाण और प्रमा का स्वरूप, प्रमाणों की प्रामाणिकता: स्वतः प्रामाण्यवाद एवं परतः प्रामाण्यवाद, ग्रन्थ विश्लेषण में प्रमाणों के अनुप्रयोग

द्वितीय खण्ड : प्रमाण सिद्धान्त

प्रत्यक्ष प्रमाण का स्वरूप ,प्रत्यक्ष प्रमाण के साधन एवं सीमाएं ,अनुमान प्रमाण की परिभाषा एवं स्वरूप, अनुमान प्रमाण के साधन एवं सीमाएं

तृतीय खण्ड : शब्द ,उपमान तथा अन्य प्रमाण

शब्द प्रमाण ,परिभषा एवं स्वरूप ,साधन एवं सीमाएं, शब्द की शक्तियॉं ,उपमान प्रमाण की परिभषा एवं स्वरूप, अर्थापत्ति तथा अनुपलब्धि प्रमाण की परिभाषा एवं स्वरूप

चतुर्थ खण्ड : प्रमाण सिद्धान्त का अनुप्रयोग

तत्व विवेचन में प्रमाण का अनुप्रयोग,आयुर्वेद में प्रमाणों का अनुप्रयोग, विधिशास्त्र में प्रमाणों का अनुप्रयोग

पंचम खण्ड : वाद-परम्परा

भारत में वाद परम्परा का स्वरूप एवं महत्व ,अधिकरण की अवधारणा,तात्पर्य निर्णय के छः अंग, कथा का स्वरूप एवं प्रकार ,श्रवण विधि से ज्ञान का तात्पर्य विश्लेषण - उपक्रम ,उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, फल, अर्थवाद तथा उपपत्ति ,कुछ महत्वपूर्ण संवादों का परिचय

षष्ठ खण्ड : आख्यान परम्परा

आख्यान का अर्थ एवं स्वरूप ,वैदिक एवं पौराणिक आख्यान परम्परा ,लोक आख्यान एवं परम्परा से सातत्य, चयनित आख्यानों के प्रतिपाद्य

सप्तम खण्ड : ग्रन्थ निर्माण की भारतीय विधि

अधिकरण की अवधारणा एव अनुबन्ध चतुष्टय, तन्त्रयुक्तियों का परिचय एवं विश्लेषण, ग्रन्थ सम्पादन की संकल्पना: अभिनवगुप्त

चतुर्थ पाठ्यक्रम

तत्व-मीमांसा

प्रथम खण्ड: भारतीय तत्व-सिद्धान्त का स्वरूप

तत्वज्ञान में दर्शन की भूमिका

दर्शन के प्राथमिक तथा गौड़ प्रयोजन

विविध दार्शनिक प्रवृत्तियाँ

द्वितीय खण्ड: परतत्व या एकं सत्

पुरुष , पुरुषोत्तम, ब्रह्म, आत्मा, ईश्वर

भगवान की अवधारणा और स्वरूप

परमात्मा ,परमशिव

तृतीय खण्ड : जगत

माया ,प्रकृति और शक्ति,काल तत्व का निरूपण

पदार्थ की अवधारणा एवं प्रकार

पंचमहाभूत की अवधारणा

चतुर्थ खण्ड: व्यक्तित्व मीमांसा

वेदान्त में आत्मतत्व विवेचन

न्याय वैशेषिक में आत्म विषयक वर्णन

जैन परम्परा में आत्म तत्व

बौद्ध मत में अनत्त का सिद्धान्त

पंचम खण्ड: स्त्री-पुरुष की तात्विक एकता

वाक् सूक्त के आधार पर स्त्रीतत्व निरूपण ,देव्यथर्वशीर्ष में प्रतिबिम्बित स्त्रीतत्व

शंकराचार्य विरचित सौंदर्य लहरी में स्त्रीतत्व की अभिव्यक्ति,जैन, बौद्ध दर्शन एवं श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी में स्त्री तत्व निरूपण,देवी एवं स्त्रियों के परिप्रेक्ष्य में शक्ति और प्रकृति का सिद्धान्त

षष्ठ खण्ड: वर्ण ,जाति तथा कास्ट

वर्ण की तात्विकता,वैदिक अवधारणा (पुरूषसूक्त तथा बृहदारण्यक उपनिषद्)

वर्ण ग्राहकता,मनीषा-पंचक में विहित वर्ण एवं जाति की व्याख्या,वर्णाधिकार : योग, भक्ति तथा आगम

कास्ट की आयातित संकल्पना का विश्लेषण

सप्तम खण्ड: एकत्व का सिद्धान्त

अद्वैत पद्धति में एकत्व निरूपण

आगम एवं निगम की परस्पर पूरकता

वैदिक ,श्रमण तथा गुरू परम्परा में अन्तः सम्बद्धता

अष्टम खण्ड: श्रीमद्भगवद्गीता का दर्शन

श्रीमद्भगवद्गीता का परिचय एवं तात्पर्य,श्रीमद्भगवद्गीता की दार्शनिकता

श्रीमद्भगवद्गीता में दैवी और आसुरी सम्पत्ति

पञ्चम् पाठ्यक्रम

धर्म एवं कर्म -विमर्श

प्रथम खण्ड : धर्म

धर्म : व्युत्पत्ति, परिभाषा और अवधारणा

धर्म और रिलीजन में मौलिक अन्तर

धार्मिक सिद्धान्त की स्थापना में मीमांसा दर्शन का महत्व

वैदिक धर्म की पारम्परिक संकल्पना और श्रमण परम्परा का समावेशीकरण

द्वितीय खण्ड : धर्म का स्वरूप

ऋत् की अवधारणा

वैदिक- आगमिक - पौराणिक धर्मानुशासन

धर्मशास्त्र में कर्तव्य निरूपण

वैदिक, श्रमण एवं श्री गुरुग्रन्थ साहिब के धर्म विषयक संयोजक सिद्धान्त

तृतीय खण्ड : कर्म-विमर्श

कर्म निरूपण, कर्म, अकर्म और विकर्म ,छः प्रकार के कर्म ,कर्म में अधिकार भेद तथा फलैक्य,

कर्म सम्बन्धी दृष्टान्त ,जड़भरत चरित

चतुर्थ खण्ड: बन्धन

जीव की अवधारणा,बन्धन का स्वरूप -परिभाषा ,प्राकृत,वैकृत ,दाक्षणिक, श्रीमद्भगवत्गीता के अनुसार बन्धन के कारण और प्रक्रिया,बन्धन सिद्धान्त की विविध दार्शनिक व्याख्याएं

पंचम खण्ड: पुनर्जन्म तथा मोक्ष

पुनर्जन्म का सिद्धान्त

मोक्ष का अर्थ और सिद्धान्त

मोक्ष के उपाय

षष्ठ खण्ड: हिन्दू: जीवन -आचार

नित्य, नैमित्तिक कर्म एवं उपासना पद्धतियॉ

व्रत, पर्व, उत्सव एवं तीर्थ माहात्म्य

यक्ष युधिष्ठिर संवाद में प्रतिबिम्बित मूल्य विश्लेषण

सप्तम खण्ड: मठ एवं मन्दिर परम्परा

मठाम्नाय ,मन्दिर परम्परा,कुम्भ मेला ,शक्तिपीठ ,ज्योतिर्लिंग एवं धाम, पवित्र संकुल की अवधारणा (एल0पी0 विद्यार्थी, वैद्यनाथ सरस्वती, माखन झा)

षष्ठ पाठ्यक्रम

संस्कृत भाषा एवं साहित्य का परिचय

खण्ड - एक

संस्कृत वर्णमाला का परिचय एवं स्वरूप विस्तार

स्वर , व्यञ्जन, संयुक्तवर्ण , अनुस्वार, अनुनासिक

विसर्ग, वर्णविन्यास, वर्णसंयोग, उच्चारणस्थान

लेखन की प्रक्रिया ,शब्द और पद में भेद

स्वरान्त शब्दरूप

पुँल्लिंग,स्त्रीलिंग,नपुंसकलिंग

राम, देव, कवि, हरि, पति, गुरु,पितृ ,दातृ

मति,धेनु ,मातृ,लता,नदी, वारि, वस्तु, फल

व्यञ्जनान्त शब्दरूप

पुँल्लिंग - राजन् , सुहृद् , गच्छत् ,विद्यार्थिन्, पथिन् , भिषक्, महत्, आत्मन् ,ब्रह्मन्, विद्वस्, मरूत्,

स्त्रीलिंग - श्री ,लक्ष्मी ,स्त्री, वाच् ,आशिष् , सरित् , परिषद्

नपुंसकलिंग - जगत्, नामन् ,कर्मन्, चक्षुष् , मनस्, धनुष्,

पुँल्लिंग,स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग में सर्वनामों के रूप

अस्मद्,युष्मद्

तद् , एतद् ,भवत्

किम्, इदम् ,अदस्, सर्व

खण्ड- दो

पाँच लकारों में परस्मैपदी धातुओं के रूप (भाग एक)

लट्लकारः (वर्तमानकाल), लृट्लकारः (भविष्यत्), लङ्लकार (भूतकाल),लोट्लकार (आज्ञार्थक),विधिलिङ्लकार (सम्भावना)

गम् ,लिख् , पठ्, चल् ,वद् ,नम् ,खाद्, ज्ञा,घ्रा, क्री,कृ ,इष् इच्छा

पाँच लकारों में परस्मैपदी धातुओं के रूप (भाग दो)

लट्लकारः (वर्तमानकाल), लृट्लकारः (भविष्यत्), लङ्लकार (भूतकाल),लोट्लकार (आज्ञार्थक),विधिलिङ्लकार (सम्भावना)

पिव्, नी , हस् , दृश्, धू, दा, क्रुध्,पृच्छ ,जीव्, त्यज् ,धाव्

पाँच लकारों में परस्मैपदी धातुओं के रूप (भाग तीन)

लट्लकारः (वर्तमानकाल), लृट्लकारः (भविष्यत्), लङ्लकार (भूतकाल),लोट्लकार (आज्ञार्थक),विधिलिङ्लकार (सम्भावना)

शक् ,क्रुध, स्मृ ,पच् ,रक्ष, भी , जप्, मिल् , चिन्त् ,पाल्,रच्,क्षल्,ग्रह्,रूद्, स्निह,आप्

पॉंच लकारों में आत्मनेपदी धातुओं के रूप

लट्लकारः (वर्तमानकाल), लृट्लकारः (भविष्यत्), लङ्लकार (भूतकाल),लोट्लकार (आज्ञार्थक),विधिलिङ्लकार (सम्भावना),लभ् ,क्षम्,वृध, सेव , ईक्ष,ऊह्,कम्प ,भाष्,रम् ,वन्द् ,याच्, वृध्

खण्ड- तीन - स्वरसन्धि का सभेद –सोदाहरण वर्णन

यण्, अयादि, गुण, वृद्धि, दीर्घ, पूर्वरूप, पररूप, प्रकृतिभाव

व्यञ्जन एवं विसर्ग सन्धिका सभेद –सोदाहरण वर्णन

परसवर्ण, अनुनासिकः , श्चुत्व ,ष्टुत्व ,जश्त्व ,चर्त्व , णत्व ,षत्व ,विसर्ग सन्धि के नियम एवं उहाहरण

समास : परिभाषा ,भेद एवं उदाहरण

केवल,अव्ययीभाव, तत्पुरुषः, कर्मधारयः, द्विगु, बहुव्रीहि ,द्वन्द्व

कारक : परिभाषा ,भेद एवं उदाहरण

कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान ,सम्बन्ध, अधिकरण, सम्बोधन

उपपदविभक्ति का परिचय

अधि, अनु, उप ,उभयतः परितः, निकषा, प्रति, धिक् , विना..... योगे द्वितीया
अलम्, विना, हीनम् , सह, साकम्, सार्धम्, समं योगे तृतीया,नम् रुच्, अलं (सामर्थ्यार्थ)..... चतुर्थी
बिना, बहिः परं, पूर्वं आदि सभी अर्थों में

खण्ड - चार विभक्ति, वचन ,पुरूष, वाच्य

सुबन्त ,तिंगन्त , एकवचन,द्विवचन,बहुवचन,कर्तृ,कर्म,भाव

प्रत्यय वर्णन : कृत् ,तद्धित, स्त्री प्रत्यय

कृत्प्रत्यय : क्त्वा ,क्त्वतु ,क्त , तुमुन्, शतृ, शानच्, ण्यत्,अनीयर्, ल्युट्, तव्यत् आदि
तद्धितप्रत्यय :मतुप्, वतुप्, इन्, ठक् (इक्), त्व , तल् आदि
स्त्रीप्रत्यय:टाप्,ङीष् आदि

अव्यय तथा उपसर्ग

अव्यय

अत्र, तत्र, यत्र, सर्वत्र, अन्यत्र, कुत्र, एकत्र, यतः, ततः ।यदा ,तदा, सदा, सर्वदा, कदा, अब, श्वः, ह्यः, परश्वः , परह्यः, वारम्, आरभ्य, निश्चयेन ।च, अपि, एव , आम्, किम्, धन्यवादः, आवश्यकम् ।उपरतः, पृष्ठतः, वामतः, दक्षिणतः, अभितः परितः । पर्याप्तम्, अत्यन्तम्, अलम्, आदि ।किन्तु, प्रायशः, अपेक्षया, अतः, यत्-तत् । इव, नु, वा, चित् ।

उपसर्ग

आ, उत्, अनु, वि, प्र, परि, अव, उप, सम, प्र ,परा, वि आदि ,सङ्ख्यावाची – शब्दरूप एवं संख्याओं के नाम , वस्तु नामावली

खण्ड- पॉच

वैदिक संस्कृत की भाषा का परिचय,संस्कृत भाषा का उद्भव एवं विकास ,भाषविज्ञान के मूल तत्व

खण्ड- छः

संस्कृत पद्य साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन ,संस्कृत गद्य साहित्य का विहंगावलोकन
संस्कृत नाट्य परम्परा में दशरूपक,नीति, कथा , उपन्यास एवं अन्य आधुनिक विधाएं
चम्पू साहित्य

सप्तम पाठ्यक्रम

समाज एवं संस्कृति

खण्ड 1: समाज व्यवस्था का उद्भव एवं विकास

समाज के मूल तत्व (संस्कार, पुरूषार्थ, वर्णाश्रम),समाज धारण हेतु यज्ञ एवं तप की संकल्पना
समाज धारण हेतु ऋण और दान की संकल्पना

खण्ड 2: कुटुम्ब

परिवार एवं परिवार के घटक तत्व,कुल परम्परा एवं कुल धर्म,गृहस्थाश्रम का आदर्श अधिकार एवं कर्तव्य (मिताक्षरा एवं दायभाग के सन्दर्भ में),शैक्षिक एवं सांस्कृतिक इकाई के रूप में परिवार

खण्ड 3: विवाह

विवाह : अर्थ , स्वरूप एवं वैशिष्ट्य,गोत्र, प्रवर एवं पिण्ड विचार,विवाह -मर्यादा पालन ,अधिजननशास्त्र

खण्ड 4: रामायण का सांस्कृतिक अध्ययन

रामायण: उद्भव, विस्तार एवं उपजीव्यता ,मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम,रामायण में स्त्री -चरित
रामायण में मानवीय सम्बन्ध एवं समरसता,रामराज्य (राम - भरत संवाद)

खण्ड 5 : महाभारत का सामान्य अध्ययन

महाभारत: परिचय ,विषयवस्तु एवं उपजीव्यता,धर्म लक्षण सम्बन्धी कथाएँ भाग-1 : धृति(गंगावतरण) ,क्षमा(वशिष्ठ एवं विश्वामित्र),दम(ययाति एवं पुरू),अस्तेय (यक्ष युधिष्ठिर संवाद),शौच (स्वर्ण के नेवले की कथा)
धर्म लक्षण सम्बन्धी कथाएँ भाग-2: इन्द्रिय - निग्रह (धर्म -व्याध -उपदेश),धी (सावित्री)
विद्या (महाभारत के स्त्रीपर्व पर आधारित मनुष्य , सर्प, गज आदि प्रसंग),सत्य (हरिश्चन्द्र , सत्यकाम आदि), अक्रोध (परीक्षित के शाप की कथा) ,महाभारत में स्त्री-चरित : द्रौपदी, कुन्ती ,गान्धारी, माद्री,रुक्मिणी,सत्यभामा, सत्यवती,उत्तरा , सुलोचना,उलूपी , शिखण्डी, हिडिम्बा,जाम्बवती ।महाभारत में वर्णित भारतवर्ष: भौगोलिक सन्दर्भ एवं वैशिष्ट्य महाभारत ,भगवद्गीता ,विदुरनीति आदि में वर्णित राजधर्म

खण्ड 6: ऋषि एवं सन्त-परम्परा भाग 01

ऋषि मार्ग की विभिन्न पारिभाषिक नामावली,ऋषि, ऋषिकाएं ,मुनि,ब्रह्मचारी, योगी, यति, सन्यासी, वैरागी आदि
भारतीय ज्ञान परम्परा में ऋषियों का प्रदेय,सन्त: अवधारणा एवं विभिन्न सम्प्रदाय ,नाथ पन्थ: पूर्ववर्ती एवं समकालीन परम्पराएं

खण्ड 7: ऋषि एवं सन्त-परम्परा -भाग 02

स्वामी रामानन्द एवं उनके समकालीन सन्त
तुलसीदास, सूरदास , सन्त कबीरदास,नाभादास, अदि
मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु,शंकरदेव,नरसीमेहता, विद्यापति,तिरूवल्लूर ,वसवन्ना, नारायण गुरू, आंडाल ,सन्त रविदास, सन्त तुकाराम,श्रीगुरूनानक एवं उनका अवदान

अष्टम पाठ्यक्रम

कला-कौशल एवम् अर्थनीति

खण्ड एक : कला की अवधारणा

कला का अर्थ, परिभाषा, स्रोत ग्रन्थ एवं वैदिक सन्दर्भ
कला का अध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक स्वरूप
कला का वैशिष्ट्य
कला एवं शिल्प

खण्ड दो : शिल्प एवं मूर्तिकला

चौसठ कलाओं का सामान्य परिचय
चित्र एवं मूर्तिकला
मूर्ति में ईश्वरत्व , प्राणप्रतिष्ठा का विज्ञान, उपासना
मन्दिर निर्माण शैली

खण्ड तीन : नाट्य-कला

नाट्य की उत्पत्ति तथा विकास
नाट्य गृह निर्माण विधि
पूर्वरंग, रंगमंच का स्वरूप एवं प्रकार
करण एवं अंगहार
नाट्य संवाद की प्रस्तुति
आंगिक तथा वाचिक
अभिनय का स्वरूप एवं प्रकार

खण्ड चार : अर्थनीति

अर्थ पुरूषार्थ ,ज्ञानसत्ता, धर्मसत्ता, अर्थसत्ता तथा राजसत्ता का परस्पर सम्बन्ध, समर्थ गुरू रामदास की अर्थनीति, गॉधी एवं पण्डित दीनदयाल का अर्थचिन्तन, करविधान एवं राजस्व

खण्ड पॉच : वार्त्ता

कृषि का स्वरूप
गो-रक्षा एवं सम्वर्धन
गाय का धार्मिक वैशिष्ट्य
व्यापार के प्रमुख प्रतिष्ठान एवं साधन

खण्ड छः वाणिज्य

वाणिज्य का अर्थ एवं मूल सिद्धान्त ,वस्तु-विनिमय ,वृत्ति एवं भृति,भारतीय औद्योगिक प्रवृत्तियॉ

नवम पाठ्यक्रम

राज-व्यवस्था तथा प्रशासन

खण्ड1: राजशास्त्र के स्रोत

राजशास्त्र का उद्भव और विकास,राजशास्त्र के प्राचीन विचारक (मनु, वाल्मीकि, कौटिल्य, एवं शुक्र)
राजशास्त्र के अर्वाचीन विचारक,राष्ट्र: अर्थ अवधारणा एवं स्वरूप

खण्ड 2: स्व-राष्ट्र नीति

राजा,मन्त्री, परिषद ,गुप्तचर व्यवस्था ,प्रजा तथा प्रजासुख

खण्ड 3: पर -राष्ट्र नीति

षाड्गुण्य उपाय,मण्डल सिद्धान्त ,आक्रमण ,प्रतिरोध और प्रत्यावर्तन: सैन्य-व्यवस्था
चक्रवर्ती तथा विजिगीषु राजा की अवधारणा

खण्ड 4: न्यायिक व्यवस्था

न्याय व्यवस्था का उद्भव एवं विकास,विधि के स्रोत एवं अनुप्रयोग
न्यायालय के संगठन तथा नियम ,स्वत्व तथा स्वामित्व ,विवाह विधि ,दत्तक विधि, उत्तराधिकार विधि, देवोत्तर विधि

खण्ड 5: न्यायिक प्रक्रिया

न्यायिक प्रक्रिया उद्भव और विकास ,विधि की समप्रभुता
निर्णय के आधार तथा प्रकार ,चतुष्पद व्यवहार

खण्ड 6: दण्ड विधान

अपराध: प्रकार और अपराध विधि ,दण्ड के सिद्धान्त और प्रकार
प्रायश्चित विधान,विधि व्यवस्था के विभिन्न सम्प्रदाय: मिताक्षरा एवं दायभाग
वाराणसी, मुंबई ,बंगाल तथा दक्षिण भारत

खण्ड 7 : रक्षा -सुरक्षा

मित्र एवं शत्रु की अवधारणा
सैन्य -विद्या
रक्षा के साधन
युद्धनीति का स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
शिवाजी की प्रशासन व्यवस्था

दशम पाठ्यक्रम

विविध विद्या-परम्परा

खण्ड 1 : विद्या-अध्ययन परम्परा

ज्ञान, विद्या एवं शिक्षा : अर्थ, परिभाषा, परस्पर सम्बन्ध,भारतीय अध्ययन परम्परा का ऐतिहासिक स्वरूप,परा -अपरा विद्या : अष्टादश विद्याओं का सामान्य परिचय,पाठ्यक्रम व्यवस्था एवं शिक्षण विधि।

खण्ड 2 : सृष्टि- विद्या

वैदिक एवं लौकिक साहित्य में ब्रह्माण्ड की उत्पति के सिद्धान्त
सृष्टि की उत्पति में हिरण्यगर्भ की अवधारणाव प्रसरण
ब्रह्माण्ड के स्थूल अवयव (आकाशगंगा, निहारिका, तारापुंज, सौर परिवार, पृथ्वी)
भारतीय विद्या का विश्वकोश : वृहत्संहिता

खण्ड 3: खगोल एवं गणित-विद्या

खगोल विद्या का परिचय एवं वैशिष्ट्य ,खगोल के प्रमुख आचार्य एवं सम्बद्ध ग्रन्थ
गणित का उद्भव एवं विकास ,अंकगणित,बीजगणित ,ज्यामिति, त्रिकोणमिति,
गणित के प्रमुख आचार्यों का योगदान ,भारतीय पंचांग का स्वरूप, सम्वत्सर की अवधारणा एवं भेद

खण्ड 4 : योग -विद्या

योगविद्याका स्वरूप एवं परम्परा ,पातञ्जल योग सूत्र का प्रतिपाद्य,हठयोग परम्परा एवं प्रयोग,योगविद्या के अभिनव अनुप्रयोग

खण्ड 5 : आयुर्वेद -विद्या

आयुर्वेद का स्वरूप एवं परम्परा ,आयुर्वेद के मूल सिद्धान्त,आधि तथा व्याधि : कारण एवं निदान
ऋतुचर्या एवं आहार,धर्मशास्त्र में स्वास्थ्य सम्बन्धी विधान

खण्ड 6 : काव्य -विद्या

काव्योत्पत्ति एवं काव्यशास्त्र ,विद्याएवं काव्य ,काव्य रचना के सिद्धान्तएवं सम्प्रदाय , विभिन्न काव्य विधाएं

खण्ड 7 स्थापत्य- विद्या

स्थापत्य विद्या का उद्भव और विकास,वास्तुपुरूष की अवधारणा तथा वास्तु में उसका पुनरावर्तन, मन्दिर,राज प्रासाद,शाला निर्माण की प्रमुख शैलियां।

खण्ड 8 लोक -विद्या

लोक विद्या का स्वरूप एवं विशेषताएं,भारतवर्ष की प्रमुख परम्पराएं,रीति-रिवाज का अर्थ एवं रूपविस्तार
लोक -आख्यान एवं लोकसंगीत